

डॉ. रॉबर्ट यारब्रो, द जोहानिन एपिस्टल्स सत्र 2A - 1, 2, और 3 जॉन में धार्मिक विषय

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो द्वारा जोहानिन पत्रों पर दिए गए उनके उपदेश, मसीह में जीवन को संतुलित करना है। यह सत्र संख्या 2A है, 1, 2, और 3 जॉन में धर्मशास्त्रीय विषय।

जॉन के पत्रों पर व्याख्यानों की श्रृंखला के दूसरे भाग में आपका स्वागत है, और हम इसे मसीह में जीवन को संतुलित करना कह रहे हैं।

व्याख्या की तलाश में हैं, तो व्याख्यान 3 पर जाएँ। और यदि आप 2 यूहन्ना पर व्याख्यान की तलाश में हैं, तो व्याख्यान 4 पर जाएँ। लेकिन इस व्याख्यान में, मैं 1, 2 और 3 यूहन्ना में धार्मिक विषयों का एक तरह से अवलोकन करना चाहता हूँ ताकि उन्हें एक साथ लाया जा सके और उस रूपरेखा का बोध हो जो हमारे पास तब होती है जब हम यूहन्ना के किसी भी पत्र को देखते हैं। एक धार्मिक विषय को एक विषय या विचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो ईश्वर के बारे में एक सत्य की पहचान करता है या उसका वर्णन करता है, चाहे हम पिता, पुत्र या आत्मा के बारे में बात कर रहे हों, या एक विचार या विषय जो ईश्वर-बचाने वाले कार्य से संबंधित हो, या दुनिया में मनुष्य के किसी भी पहलू से संबंधित हो जैसा कि ईश्वर उन्हें देखता है। और, निश्चित रूप से, हम सीखते हैं कि ईश्वर किस तरह से मानवजाति और दुनिया को प्रकट शास्त्र के माध्यम से देखता है।

अब, आपको जॉन के पत्रों में धार्मिक विषयों को पहचानने के लिए किसी तकनीकी विधि की आवश्यकता नहीं है। आप पवित्रशास्त्र को पढ़कर सहज रूप से विषयों को पहचान सकते हैं, यह जानकर कि यह परमेश्वर, मनुष्यों, पाप, उद्धार के बारे में क्या कहता है। बाइबल में मूल उद्धार संदेश, जो यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का शुभ समाचार है, वह मूल संदेश विशेषज्ञ प्रशिक्षण या निर्देश के बिना स्पष्ट है।

लेकिन अगर आप ये व्याख्यान देख रहे हैं, तो आप शायद समझ के अधिक उन्नत स्तर पर हैं। आपको शायद यह समझ हो कि परमेश्वर का अनुसरण करना, मसीह में विश्वास करना, उसकी सेवा करना शामिल है। ईसाई धर्म में सेवा या सेवकाई के लिए शब्द डायकोनिया है, और इफिसियों की पुस्तक में परमेश्वर के लोगों को डायकोनिया के कार्य के लिए प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता के बारे में बात की गई है।

परमेश्वर ने प्रेरितों, पादरी और शिक्षकों जैसे नेताओं को चर्च को दिया है, ताकि वे परमेश्वर के लोगों को डायकोनिया के कार्य के लिए सुसज्जित कर सकें। और इसलिए, उस कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए, मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर से अच्छी तरह से जुड़ने और उसकी सेवा करने और उसे महिमा देने के लिए, हमें पवित्रशास्त्र और यूहन्ना के पत्रों में धर्मशास्त्रीय विषयों की सतही समझ से अधिक की आवश्यकता है। और इसलिए, हम इन पत्रों को एक विशेष लेंस के माध्यम से देखने जा रहे हैं जो यह स्पष्ट करने में मदद करेगा कि पत्रों में क्या है।

और यह सवाल मेरे दिमाग में नहीं आया, मुझे कुछ साल पहले इन पत्रों से निपटने के लिए कहा गया था, और यह सवाल दुनिया के एक हिस्से में एक चर्च से उठता है जिसे सताया जाता है। और इसलिए, एक समूह के रूप में, वे इन पत्रों का अध्ययन कर रहे थे, बड़े पैमाने पर ऑनलाइन, क्योंकि उनके लिए सार्वजनिक रूप से एक साथ आना बहुत खतरनाक है, और उनके नेताओं ने मुझसे पूछा, क्या आप जॉन के पत्रों में धार्मिक विषयों को प्रस्तुत करेंगे, इस सवाल का जवाब देते हुए, जॉन को उन ईसाइयों से क्या कहना है जो अपने विश्वास के लिए मर रहे हैं? यह एक परिदृश्य है, आप जानते हैं, वफादार ईसाई जो मसीह या अपने स्वीकारोक्ति या एक-दूसरे को धोखा नहीं दे रहे हैं, और यदि आवश्यक हो, तो अपने विश्वास के लिए मर रहे हैं। और दूसरी ओर, उन ईसाइयों के लिए जो अपने रक्तहीन धर्म के साथ जी रहे हैं।

और उसका मतलब यह था कि वे एक समृद्ध क्षेत्र में या एक शांतिपूर्ण क्षेत्र में एक धर्म के साथ रह रहे हैं जहाँ उन्हें कुछ भी खर्च नहीं करना है, आप जानते हैं, उनका धर्म रक्तहीन है। तो, दो समूह, और यह प्रश्न मानता है कि कुछ लोग अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार हैं, और जॉन के पत्र उस समूह से बात करते हैं। वे मसीह की सेवा में साहस, निष्ठा और बलिदान के उच्चतम स्तर के लिए एक प्रोत्साहन हैं।

साथ ही, यूहन्ना की परिस्थिति में और हमारे यहाँ भी, लोगों को ऐसे रक्तहीन धर्म में रहने के प्रलोभन का सामना करना पड़ता है जो कम माँग करता है। कुछ लोग इतने उत्साही या प्रतिबद्ध नहीं होते कि अगर उनसे ऐसा करने की माँग की जाए तो वे मसीह को अस्वीकार करने के बजाय अपना जीवन दे दें। और यूहन्ना कमज़ोर या झूठे विश्वासियों को चेतावनी देने और उन्हें मसीह के महँगे लेकिन शानदार सत्य की ओर वापस बुलाने के लिए लिखता है, आप जानते हैं, एक संतुलित ईसाई जीवन जो दुनिया के उद्धार में परमेश्वर के हित के विरुद्ध हमारे स्वार्थ को संतुलित कर सकता है, और कभी-कभी मसीह के प्रति वफादारी के लिए बलिदान भी शामिल करता है।

इसलिए, मैं रुककर पूछना चाहता हूँ कि हमें क्यों सोचना चाहिए कि यूहन्ना के पत्रों में इस प्रश्न के बारे में कोई विशेष अंतर्दृष्टि है। और इसके कई कारण हैं। एक कारण यह है कि, पूरे पवित्रशास्त्र की तरह, 1 और 3 यूहन्ना पवित्र आत्मा से प्रेरित हैं।

हम जानते हैं कि सभी पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं, और यह शिक्षा, फटकार, सुधार, धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का पुरुष या स्त्री हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से सुसज्जित हो सके जिसके लिए हमें बुलाया गया है। और परमेश्वर अपने लोगों को परीक्षा के सबसे बुरे समय में सहारा देने के लिए अपने वचन का उपयोग करता है। जब यीशु को शैतान ने परीक्षा में डाला, तो उसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का हवाला दिया।

जब वह क्रूस पर था, तो उसने भजन संहिता की पुस्तक का हवाला दिया। परमेश्वर का वचन परमेश्वर के पुत्र को भी सहारा देने के लिए शक्तिशाली है, जब वह दबाव और परीक्षण के अधीन होता है। और यह अक्सर सच होता है कि जैसे ही उसे दुनिया में भेजा गया, उसने अपने शिष्यों को दुनिया में भेजा, और कभी-कभी इसके लिए आत्म-बलिदान की आवश्यकता होती है।

और परमेश्वर का वचन उस घड़ी में परमेश्वर के लोगों को सहारा देता है। मुझे लगता है कि जॉन के पास अंतर्दृष्टि होने का एक और कारण यह है कि उसे उन लोगों के लिए पादरी की तरह चिंता है जो अपने जीवन में पाप और अंधकार के बारे में खुद को धोखा दे रहे हैं। वह उनके बारे में चिंतित है।

और हम 1 यूहन्ना अध्याय 1 में देखेंगे, ऐसे लोग हैं, जो स्पष्ट रूप से, परमेश्वर के साथ संगति का दावा करते हैं, लेकिन वे अंधकार में चल रहे हैं। यह एक रक्तहीन धर्म का वर्णन करता है जो उन्हें मसीह से भटकने पर उत्पीड़न से बचने में सक्षम बनाता है। और जब वे 1 यूहन्ना 4 में यूहन्ना द्वारा दी गई चेतावनी का पालन करते हैं, तो वह उन्हें मसीह विरोधी की आत्मा के बारे में चेतावनी देता है, जिसके बारे में आपने सुना था कि वह आ रही थी और अब दुनिया में पहले से ही है, 1 यूहन्ना 4:3। यूहन्ना को ऐसे लोगों की चिंता है जो अपने स्वीकारोक्ति की ईमानदारी का फायदा उठा रहे हैं और अंधकार में चल रहे हैं।

या तो इसलिए कि उन्हें यह पसंद है या इसलिए कि यह उनकी ओर ध्यान आकर्षित करने से बचता है, जो उत्पीड़न का कारण बन सकता है। तीसरा कारण जिसके बारे में मुझे लगता है कि जॉन को इस बारे में जानकारी है, वह यह है कि जॉन पीड़ा के आघात को जानता है, जैसा कि वह लिखता है। अपनी खुद की शहादत के बारे में नहीं, हालाँकि वह पटमोस से लिख रहा है, या वह बाद में पटमोस से लिखेगा, क्योंकि उसे गिरफ्तारी और कारावास के बारे में पता चल जाएगा।

लेकिन वह अपने प्रियजनों की मृत्यु के बारे में जानता है। उसने देखा है, और वह आघात से प्रभावित हुआ है, और यह उसे मसीह में अपनी प्रतिबद्धता के कारण वास्तविक या संभावित आघात का सामना करने वाले लोगों के लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शक बनाता है। सबसे पहले, यीशु को क्रूस पर मरते हुए देखने के आघात को याद करें, जिसमें उनके धड़ में भाला भी शामिल है।

यह यूहन्ना अध्याय 19 में है। सैनिकों में से एक ने भाला उसके पंजर में भोंका, और तुरन्त खून और पानी निकला। जिसने यह देखा, उसने गवाही दी है।

यह जॉन कह रहा है, मैंने यह देखा। उसकी गवाही सच है, और वह जानता है कि वह सच कह रहा है ताकि आप भी विश्वास कर सकें। मुझे नहीं पता कि आपने किसी को मरते हुए देखा है या नहीं।

मुझे नहीं पता कि क्या आप शारीरिक हिंसा के आसपास रहे हैं और जब लोग एक दूसरे पर हमला करते हैं तो एड्रेनालाईन महसूस करते हैं। हो सकता है कि लोग पत्थर फेंकते हों। लोग कुछ करते हैं।

शायद खून बह रहा हो। शायद आवाज़ में पीड़ा हो। लोग कराह रहे हों, या लोग रो रहे हों, या लोग गिर रहे हों।

ये ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप नहीं भूलते। दुनिया भर में लोग बाइबल पढ़ते हैं, और इसे रोमांटिक बनाना आसान है। आप इससे टेलीविज़न शो बना सकते हैं, जो ठीक हो सकता है, लेकिन टीवी एक काल्पनिक माध्यम है।

आप बैठकर इसे और इसके कलाकारों को देखते हैं। चीजों को अभिनीत होते देखना एक बात है, और यह काफी ग्राफिक लग सकता है, लेकिन आप स्थिति पर नियंत्रण रखते हैं। आप चाहें तो उठकर पॉपकॉर्न ले सकते हैं या फिर इसे बंद कर सकते हैं।

जिस रात यीशु को धोखा दिया गया, उस रात की घटनाओं का सिलसिला, उस पर मुकदमा चलाया जाना, और अगले दिन जब उसे सूली पर चढ़ाया गया, ये घटनाएँ नियंत्रण से बाहर थीं, और वे और भी बदतर होती गईं। यीशु को कोड़े मारे गए, उसके सिर पर काँटों का ताज पहनाया गया, और यीशु का मज़ाक उड़ाया गया। यह वह व्यक्ति था, खास तौर पर उसके अनुयायी, वह इनमें से किसी के भी लायक नहीं था, और यह सब उस पर थोपा जा रहा था, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई गाड़ी ढलान पर जा रही हो।

जैसा कि आप सुसमाचार पढ़ते हैं, आप देख सकते हैं कि पिलातुस यह कहने की कोशिश कर रहा है, देखो, मेरे पास इस व्यक्ति के बारे में कुछ भी नहीं है, चलो इसे जाने देते हैं। लेकिन ऐसी ताकतें काम कर रही थीं जो उसे जाने नहीं दे रही थीं, और उन्होंने उसे जाने नहीं दिया, और इसलिए अंत में उसे क्रूस पर लटका दिया गया, यहाँ तक कि उसके मृत शरीर को भी सैनिकों ने भाले से अपवित्र कर दिया, उसे कुत्ते या मांस के टुकड़े या किसी और चीज़ की तरह व्यवहार किया। यह दर्दनाक होगा यदि आप प्रिय शिष्य हैं, और आपको लगता है कि यीशु इसराइल के उद्धारकर्ता हो सकते हैं, और अचानक, सब कुछ उलट जाता है, और उसके साथ बहुत भयानक तरीके से व्यवहार किया जाता है।

या फिर आप यीशु की गिरफ्तारी के बारे में सोच सकते हैं। यूहन्ना 18:10 कहता है कि गिरफ्तारी के दौरान एक आदमी का कान काट दिया गया था, और इस पल के नाटक में, यूहन्ना 18 में, यीशु ने यूहन्ना और दूसरों को गिरफ्तार होने से बचाया। जब सैनिक आए, तो यीशु ने उनसे कहा, मैंने तुमसे कहा कि मैं वही हूँ, इसलिए अगर तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो।

और फिर जॉन लिखते हैं, " यह इसलिए हुआ कि जो वचन उसने कहा था, वह पूरा हो, कि जिन लोगों को तूने मुझे दिया है, उनमें से मैंने एक भी नहीं खोया है। जॉन व्यक्तिगत रूप से यीशु की अपने अनुयायियों को नुकसान से बचाने की क्षमता को जानता था, क्योंकि वह रात के अंधेरे में सैनिकों के साथ मशालों और अपने सभी हथियारों के साथ इस दबाव भरे क्षण में था, और वे सभी को गिरफ्तार करने जा रहे थे। और यीशु उन्हें बचाता है।

वह कहता है, मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसके पीछे तुम पड़े हो, मुझे ले जाओ, इन लोगों को जाने दो, और आश्चर्यजनक रूप से, वे ऐसा करते हैं। यह आघात है। गिरफ्तारी, कारावास और पिटाई का आघात है।

चर्च के शुरुआती दिनों में, जॉन उन प्रेरितों में से एक थे जिन्हें गिरफ्तार किया गया था और प्रेरितों के काम 5:18 में कैद किया गया था। उन्हें प्रेरितों के काम की आयत 5.19 में एक स्वर्गदूत द्वारा मुक्त किया गया था। उन्हें महासभा के सामने मुकदमा चलाया गया, जो प्रेरितों को मारना चाहते थे, जिसमें जॉन भी शामिल थे, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 5 में पढ़ते हैं। और उन्हें न मारने का फैसला किया गया, लेकिन रिहा होने से पहले उन्हें पीटा गया, प्रेरितों के काम 5:40-42। इसलिए जॉन को गिरफ्तारी, शारीरिक पीड़ा, वफादार सुसमाचार घोषणा के लिए मौत की धमकी का व्यक्तिगत अनुभव था। और वह यह भी जानता था कि मुझे यकीन है कि उसने जो महसूस किया वह ईश्वरीय उद्धार का चमत्कार था।

लेकिन ये सभी दर्दनाक घटनाएँ थीं। जॉन के भाई, जेम्स, पीटर, जेम्स और जॉन का आघात है। जॉन और जेम्स भाई थे।

और यह याकूब प्रारंभिक चर्च में दूसरा ज्ञात शहीद है, पहला स्टीफन था। याकूब को गिरफ्तार किया गया और उसे प्रेरितों के काम अध्याय 12, पद 1 में मार दिया गया। लगभग उसी समय, राजा हेरोदेस ने चर्च से जुड़े कुछ लोगों पर हिंसक हाथ डाले। उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मार डाला।

और जब उसने देखा कि यहूदियों को यह अच्छा लगा, तो उसने पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया। तो, याकूब पहले लाइन में था, शायद उन्होंने उसे पकड़ लिया, फिर वे पतरस को पकड़ने जा रहे थे। आपको क्या लगता है कि वे आगे किसको पकड़ने जा रहे थे? वे जॉन को पकड़ने जा रहे थे।

लेकिन बेशक, पीटर को रिहा कर दिया गया, याद रखें, एक देवदूत उसके सेल में आता है और उसे उठने और कपड़े पहनने के लिए कहता है, और वह दरवाजे से बाहर चला जाता है, और फिर वह वहाँ जाता है जहाँ ईसाई छिपे हुए हैं। वह दरवाजा खटखटाता है, और नौकरानी जो दरवाजे का जवाब देती है, देखती है कि यह वही है, और वह वापस जाती है और रिपोर्ट करती है, और वह कहती है, वहाँ पीटर है, और उन्हें लगता है कि यह किसी तरह का भूत है। वे उसकी रिहाई के लिए प्रार्थना कर रहे थे, लेकिन जब वह दिखाई देता है, तो वे विश्वास नहीं कर पाते कि यह वही है।

लेकिन यह वही था। लेकिन जॉन, आप जानते हैं, वह इन सब से गुज़र रहा है, और यह उसका भाई है जिसका सिर काट दिया गया है, और पीटर बाल-बाल बच गया, और मुझे लगता है, आप जानते हैं, जॉन अगला हो सकता है। जॉन को एक और आघात से गुजरना पड़ा।

हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना ने यीशु के सौतेले भाई पीटर और याकूब के साथ यरूशलेम में कई वर्षों तक पादरी के रूप में सेवा की। तो आपके पास यीशु का सौतेला भाई याकूब है, जो मुख्य पादरी लगता है, लेकिन पतरस और यूहन्ना उसके साथ सेवा कर रहे हैं। यह गलातियों 2:9 में है। पौलुस उन्हें स्तंभ कहता है।

और हम उनके बारे में प्रेरितों के काम 15 में भी पढ़ते हैं। जेम्स शहीद हो गए, और मुझे नहीं पता कि आपने अन्य ईसाइयों के साथ सेवा की है या नहीं। आप इसे देख रहे होंगे, आप कहीं औपचारिक या अनौपचारिक रूप से किसी स्टाफ़ में हो सकते हैं, नेतृत्व टीम में सेवा कर रहे होंगे।

हम चर्च में सेवा करने वाले ईसाइयों के रूप में करीब आते हैं। हम विशेष रूप से करीब आते हैं यदि हम कर्मचारी सदस्य हैं जो साथ-साथ सेवा करते हैं। और ऐसा लगता है कि यीशु के सौतेले भाई जेम्स और जॉन और पीटर ने 1840 के दशक से, कम से कम, 1860 के दशक की शुरुआत तक सेवा की।

तो, 15, 20, शायद 25 साल या उससे ज़्यादा समय तक वे एक सेवकाई दल रहे थे। और प्राचीन रिपोर्टों के अनुसार, जेम्स को मंदिर की दीवार पर खड़े होकर भीड़ को संबोधित करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और वे चाहते थे कि वह भीड़ को बताए कि यीशु इसराइल का राजा नहीं है। यीशु मसीहा नहीं है।

और जेम्स एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे कैमल नीज़ कहा जाता था, और रिपोर्ट्स कहती हैं कि वह हर दिन मंदिर जाता था और पत्थर की सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करता था और इज़राइल के लिए प्रार्थना करता था, अपने यहूदी देशवासियों के लिए प्रार्थना करता था कि वे यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करें। इसलिए, वह वर्षों तक इसका प्रचार करने और इज़राइल के लिए प्रार्थना करने के बाद भी इससे इनकार नहीं करने वाला था। और इसलिए, वह यीशु के बारे में जो मानता है, उसकी पुष्टि करता है, और उसे मार दिया जाता है।

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्होंने उसे दीवार से नीचे फेंक दिया, दूसरी रिपोर्ट में कहा गया है कि उसके सिर पर किसी ऐसे व्यक्ति ने प्रहार किया जिसके पास एक डंडा था, यह वास्तव में कपड़े धोने के बर्तन में कपड़े पलटने के लिए एक चप्पू था। वहां चलने वाले लोगों को अंग्रेजी में फुलर कहा जाता था। इसलिए, वहां एक फुलर था, और उसने दीवार से नीचे फेंकने के बाद अपने डंडे से जेम्स के दिमाग को कुचल दिया।

खैर, फिर से, चाहे जॉन वहाँ था या नहीं, यह उसका सहकर्मी था जिसकी इस अवसर पर हत्या कर दी गई। और यह एक और स्मृति है जिसे वह अपने साथ कब्र तक ले जाएगा। मैंने पहले व्याख्यान में पहले ही उल्लेख किया है, जॉन और जेम्स सामरियों को नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग बुलाने की कोशिश कर रहे थे।

इसे अनदेखा करना आसान है, लेकिन क्या आपने कभी किसी को मारना चाहा है? क्या आपने कभी किसी का गला घोटने की इच्छा महसूस की है, या क्या आपने कभी गुस्से में आकर किसी को नुकसान पहुँचाने की इच्छा की है? खैर, जॉन ने ऐसा किया था, और ल्यूक 9.55 कहता है कि यीशु ने इसके लिए उसे और जेम्स को फटकार लगाई थी। अब मुझे लगता है कि उसे इसके लिए माफ़ कर दिया गया था, लेकिन मेरे पास इस तरह की एक या दो इच्छाएँ थीं, और मुझे नहीं लगता कि, जब तक मैं अपना दिमाग नहीं खो देता, मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊँगा। आपके अंदर हत्या करने की इच्छा का उठना एक शर्मनाक याद है।

ऐसा होता है। मेरे साथ भी किशोरावस्था में ऐसा हुआ था, और मुझे इस पर गर्व नहीं है। मुझे खुशी है कि भगवान ने मुझे इसके लिए माफ़ कर दिया, लेकिन ये दर्दनाक घटनाएँ हैं जो हमारी यादों के भंडार का हिस्सा बन जाती हैं, हमारे चरित्र का हिस्सा बन जाती हैं।

वे हमें याद दिलाते हैं कि जॉन ने जीवन जीने के कठिन पहलुओं, क्षमा और सुलह की सुंदरता का अनुभव किया है, लेकिन साथ ही हम क्या हैं, हमारे आस-पास के लोग क्या करने में सक्षम हैं, इसकी कच्ची यादों का भी अनुभव किया है। और फिर, आप जानते हैं, ऐसे मुद्दे, घटनाएँ जो हमें दुखी करती हैं और जो हमें कभी नहीं छोड़ती हैं। यहाँ मेरे व्याख्यान के फुटनोट्स में, मेरे पास एक किताब है जो अंग्रेजी में परामर्शदाताओं के बीच काफी प्रसिद्ध है।

यह बेसेल द्वारा लिखी गई है, वह है बेसेल, बेसेल वैन डेर कोल्क, कोल्क। और इसका नाम है द बॉडी कीप्स द स्कोर। द बॉडी कीप्स द स्कोर: ब्रेन, माइंड, एंड बॉडी इन द हीलिंग ऑफ ट्रॉमा।

किया गया आघात इतना नहीं है, हालाँकि वह मायने रखता है, लेकिन वह आघात जो हमें प्रभावित करता है, बस उसके निकट होने से, जैसा कि मैंने फिर से कहा, एड्रेनालाईन महसूस करना, आप जानते हैं, कुछ ऐसा देखना जिसे हम अनदेखा नहीं कर सकते, और यह उस समय से वहाँ है, और यह हमें प्रभावित करता है। जॉन के लिए एक और आघात, और आखिरी जिसका मैं उल्लेख करूँगा, वह यह है कि उसने देखा होगा, और हम नहीं जानते कि कितनी दूरी से, लेकिन उसने 1860 के दशक के अंत में रोमनों द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश देखा होगा।

हालाँकि जॉन इस बात के कितने करीब था, हम नहीं जानते कि रोमन लूटपाट और तबाही से कितने पहले वह यरूशलेम से बाहर निकल गया था, लेकिन उसके कई हज़ार साथी यहूदी मारे गए, और निस्संदेह उनके साथ कई मसीहाई यहूदी भी मारे गए। मसीहाई यहूदियों से मेरा मतलब यहूदिया और यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों से है जिन्होंने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार किया। और उनमें से ज़्यादातर ने ऐसा नहीं किया, लेकिन उनमें से कई ने ऐसा किया।

और ये विश्वासी तब मर जाते जब रोमी लोग आते और हर जीवित चीज़ को मार देते जो उन्हें मिल जाती। खून सड़कों पर बहता था, सचमुच। जॉन और दूसरे ईसाई बच गए।

जैसा कि मैंने कहा, उन्होंने यीशु की एक चेतावनी का पालन किया जो उन्हें याद थी कि जब उन्होंने देखा कि सेना उनके चारों ओर की दीवारों पर हमला कर रही है तो उन्हें शहर से भाग जाना चाहिए। लेकिन हम यरूशलेम की लूट की तुलना कई अन्य स्थितियों से कर सकते हैं। हाल के वर्षों में ऐसे शहर हैं जो कम से कम मेरे इस व्याख्यान के दृष्टिकोण से अभिभूत हैं, क्योंकि रूस लगातार यूक्रेन पर बमबारी कर रहा है।

यह बहुत दर्दनाक है। मैं अभी एक ऐसे शहर में रह रहा हूँ जहाँ एक बवंडर आया और एक के बाद एक कई ब्लॉक तबाह हो गए। इसमें पाँच लोगों की मौत हो गई।

लोग अपने ईंट के घरों के मलबे में रह रहे हैं, अगर वे अभी भी जीवित हैं। यदि आप उस स्थिति में रहते हैं, तो यह दर्दनाक है। बवंडर के अगले दिन, मैं उस पड़ोस में रहने वाले एक पादरी को

संदेश भेज रहा था, और जब बवंडर गुजरा तो वह गाड़ी चला रहा था, और उसने कहा कि यह उसके जीवन की सबसे डरावनी घटना थी।

और वह 70 के दशक में एक आदमी था जिसने बहुत सी डरावनी चीजें देखी थीं। लेकिन उसने कहा कि हवा का जोर, वह कहता है कि उसे नहीं पता कि वह कैसे रहता था, लेकिन चीजें उसके चारों ओर उठाई जा रही थीं, गायब हो रही थीं और नष्ट हो रही थीं। वह इसे कभी नहीं भूलेगा।

और यह तो बस एक छोटे से शहर में आए बवंडर की बात है जिसमें पाँच लोग मारे गए। हम 50,000 या उससे ज़्यादा लोगों की मौत की बात नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यरुशलम में हुआ था। यरुशलम का पतन एक और दर्दनाक अनुभव होगा जिसने जॉन को परीक्षण, पीड़ा और मृत्यु के समय में मसीह में विश्वास के बारे में ईमानदारी से लिखने के योग्य बनाया।

तो, मैं यहाँ जो बात कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि जॉन के पत्र विचारों के बारे में साफ-सुथरे, अमूर्त विचार नहीं हैं। वे यीशु के एक प्रिय शिष्य से आते हैं, जिसने मृत्यु देखी और एक ऐसे समुदाय में रहता था, जहाँ लगातार गिरफ्तारी और यहाँ तक कि मृत्युदंड का खतरा बना रहता था, जैसा कि स्टीफन, जॉन के भाई जेम्स और जॉन के सह-पादरी जेम्स, यीशु के भाई के साथ हुआ था। इसलिए जॉन उन लोगों से विनम्रता और अधिकार के साथ बात कर सकता था, जो संभावित मृत्यु का सामना कर रहे थे और जिनका विश्वास कमज़ोर था और जो मसीह को बिल्कुल नहीं जानते थे।

और मैं 1 यूहन्ना 5:12 के बारे में सोचता हूँ, आप जानते हैं, 1 यूहन्ना की पुस्तक के अंत के करीब पहुँचते हुए, जिसके पास बेटा है, उसके पास जीवन है। स्टीफन के पास जीवन था, जेम्स, उसके भाई और उसके सह-पादरी, और उन सभी के पास जीवन था। यह उनसे छीन लिया गया था, लेकिन वे इस जीवन से परमेश्वर में जीवन, मसीह में जीवन में चले गए।

जिसके पास बेटा है, उसके पास यह जीवन है। जिसके पास परमेश्वर का बेटा नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। वे चयापचय कर रहे होंगे, लेकिन वे जीवन की गुणवत्ता नहीं जानते जो परमेश्वर के साथ संवाद से आती है।

इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हम यह स्पष्ट रूप से कहें कि, आप जानते हैं, जॉन एक ऐसे व्यक्ति हैं जो वास्तविक जीवन को अच्छी तरह समझते हैं और जब दांव उंचे होते हैं तो सामुदायिक जीवन की गुणवत्ता को अच्छी तरह समझते हैं। मैं यहाँ कुछ दर्जन यात्राओं के बारे में सोच रहा हूँ जो मैंने कुछ साल पहले अफ्रीका के सूडान देश में लगभग 17 वर्षों के दौरान की थीं। और उस पूरे समय के दौरान, ईसाइयों को सताया जा रहा था।

और हम इकट्ठा होते और ईसाई नेताओं को पढ़ाते। और हमारे आराधना सत्रों में बहुत खुशी होती थी। लेकिन खुशी इतनी अधिक होने का एक कारण यह था कि लोग एक और दिन जीने में सक्षम होने से बहुत राहत महसूस कर रहे थे, क्योंकि वे हमेशा सूडान देश में धार्मिक बहुमत द्वारा गिरफ्तारी और उत्पीड़न के अधीन थे।

और ऐसे बहुत से लोग थे जिन्हें हर कोई जानता था और जो मारे गए थे। और हर सम्मेलन में कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें पिछले सालों में गिरफ़्तार किया गया था और उन पर अत्याचार किया गया था। लेकिन वे अभी भी सुसमाचार के प्रति सच्चे थे।

वे मुक्ति के आनंद को जानते थे। उनमें से कुछ को लगा कि उनका मिशन मुसलमानों को गवाही देना है। आप जानते हैं, यीशु ने कहा, अपने दुश्मनों से प्यार करो और उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हें सताते हैं।

योजना बनाने, प्रार्थना करने में एक उद्देश्य और अर्थ पाया। मैं दूसरे मुसलमान के साथ सुसमाचार कैसे साझा कर सकता हूँ? मैं उन्हें मसीह के पास आते कैसे देख सकता हूँ? और इन सम्मेलनों में बहुत से ऐसे लोग थे जो इस्लाम में जन्मे थे और जो मसीह में आस्था रखते थे। लेकिन उन्होंने जीवन, जीवन शक्ति, पापों की क्षमा की भावना, मसीह में भविष्य के आश्वासन की सराहना की, जो इस्लाम प्रदान नहीं करता है।

इस्लाम में मोक्ष का कोई आश्वासन नहीं है, जबकि हमारे पास एक उद्धारकर्ता का आश्वासन है जो मृतकों में से जी उठा और अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ। आप जानते हैं, हमारे पास एक बहुत ही वास्तविक आश्वासन है जो हमारे लिए उस जीवन से कहीं अधिक वास्तविक है जो हम अभी जी रहे हैं। यह जीवन समाप्त हो जाएगा।

यह जीवन व्यर्थ है। लेकिन हमारा असली जीवन आने वाले युग में मसीह में परमेश्वर के साथ रहना है। और यूहन्ना ने इसे समझा।

और इसलिए, जब हम उनके पत्रों को देखते हैं, तो आप जानते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप जॉन के वास्तविक जीवन के आयाम को याद करें, जो उस आघात को जानता था जिसे आप शायद जानते हैं। मुझे लगता है कि हम सभी, अगर हम इसके बारे में सोचें, तो आघात को जानते हैं। कुछ मामलों में, हम आघात को सिर्फ़ अपने पालन-पोषण से जानते हैं, क्योंकि पालन-पोषण की कुछ शैलियाँ, जैसे कि आपके माता-पिता द्वारा पीटा जाना, या आपके माता-पिता द्वारा त्याग दिया जाना, ये चीज़ें आघात पहुँचाने वाली होती हैं।

जॉन को पता था कि आघात क्या होता है। भगवान जानते हैं कि आघात क्या होता है, और सुसमाचार इसे संबोधित करता है। इसलिए, हम जॉन के पत्रों में धार्मिक अवधारणाओं के बारे में बात कर रहे हैं, और मैं इसके लिए एक अनुभवजन्य दृष्टिकोण अपनाने जा रहा हूँ।

शास्त्र में हर कथन सत्य है, जैसा कि हम इसे सही ढंग से व्याख्या करते हैं, लेकिन हम देखते हैं कि बाइबल के लेखक उस बात पर जोर देते हैं जिसके बारे में वे सबसे अधिक बात करते हैं। दूसरे शब्दों में, उल्लेख की आवृत्ति का अर्थ है ध्यान, बाइबल की पुस्तक का जोर। जितना अधिक वे किसी चीज़ के बारे में बात करते हैं, उतना ही अधिक संभवतः हमें पुस्तक में उस पर ध्यान देना चाहिए।

सामान्य सेवकाई उद्देश्यों के लिए, धार्मिक विषयों की खोज इस बात पर केन्द्रित होनी चाहिए कि बाइबल की पुस्तक में सबसे प्रमुख क्या है। और जब हम यूहन्ना के पत्रों के यूनानी पाठ का विश्लेषण करते हैं, तो हमें एक दर्जन सबसे अधिक बार इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द मिलते हैं जो उसके धार्मिक संदेश का सारांश देते हैं। तो फिर से, हमारे प्रश्न के बारे में सोचते हुए, यूहन्ना को उन मसीहियों से क्या कहना है जो अपने विश्वास के लिए मर रहे हैं, और उन मसीहियों से जो अपने रक्तहीन धर्म के साथ जी रहे हैं, हम इसे इन प्रमुख शब्दों के दृष्टिकोण से देखना चाहते हैं, और मैंने इन्हें उनके घटित होने के क्रम में सूचीबद्ध किया है।

ये जॉन के पत्रों में सबसे ज़्यादा बार दोहराए जाने वाले 12 शब्द हैं। ईश्वर, प्रेम, जानना, एक ऐसे शब्द के साथ जो सामान्य रूप से जानने का एक ज़्यादा अनुभवात्मक प्रकार है, रहने या बने रहने का विचार, नंबर पाँच, दुनिया, ब्रह्मांड, नंबर छह, बेटा, बड़ा s, जो ईश्वर का बेटा है, सात, प्रेम, आठ, पाप, नौ, जानने के लिए एक और शब्द, ओइडा , जो सिद्धांतों या सत्यों के ज्ञान से ज़्यादा होता है, नंबर 10, सुनना, नंबर 11, आज्ञा, और नंबर 12, पिता। तो, मैंने जो किया है वह एक चार्ट बनाना है, और हम इनमें से हर शब्द को देखने जा रहे हैं, और हम मरने वाले वफ़ादार लोगों के लिए जॉन के संदेश को देखने जा रहे हैं, और हम उन लोगों के लिए जॉन के संदेश को देखने जा रहे हैं जो ढीले हैं।

तो, आइए परमेश्वर से शुरू करें। परमेश्वर का उल्लेख 1 यूहन्ना में 62 बार, 2 यूहन्ना में दो बार और 3 यूहन्ना में तीन बार किया गया है। यहाँ एक सामान्य संदर्भ 1 यूहन्ना 2:14 होगा, मैं तुम्हें पिताओं को लिखता हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है, मैं तुम्हें युवा पुरुषों को लिखता हूँ क्योंकि तुम मजबूत हो और परमेश्वर का वचन तुम में रहता है और तुमने दुष्ट पर विजय प्राप्त की है।

मरने वाले विश्वासियों के लिए संदेश यह है कि शाश्वत परमेश्वर दुष्ट को हरा देता है। सभी विश्वासियों के लिए, मसीह में विश्वास के सभी चरणों में, शाश्वत परमेश्वर दुष्ट को हरा देता है। वह ऐसा उस वचन के माध्यम से करता है जिसे वह अपने लोगों में डालता है, और इस वचन के माध्यम से, वे सभी बुराई और भय पर विजय प्राप्त करते हैं।

अब यह सिर्फ़ एक शब्द नहीं है, बल्कि यह एक पृष्ठ पर या पाठ में लिखे शब्द हैं, लेकिन यह शब्द हमें ईश्वर से अवगत कराता है। यह बताता है कि हमारे दिलों को उन चीज़ों के लिए खुला रखने की क्या ज़रूरत है, जिनके लिए वे बंद थे। ईश्वर वास्तविक है, और वह अपने वचन के ज़रिए हमारे दिलों को खोलता है।

मुझे इसे फिर से पढ़ने दें, मैं आपको पिताओं को लिखता हूँ क्योंकि आप उसे जानते हैं जो शुरू से है, मैं आपको युवा पुरुषों को लिखता हूँ क्योंकि आप मजबूत हैं और परमेश्वर का वचन आप में रहता है। बेशक, यीशु को जॉन के सुसमाचार में परमेश्वर का वचन कहा जाता है। इसलिए हम इसे क्राइस्टोलॉजिकल शब्दों के साथ-साथ शास्त्र के शब्दों में भी सोच सकते हैं, लेकिन वे दोनों मौजूद हैं।

तुमने दुष्ट पर विजय प्राप्त कर ली है। यह मरने वाले विश्वासियों के लिए यूहन्ना का संदेश है। वचन के द्वारा , तुम दुष्ट पर विजय प्राप्त करते हो।

अब उन लोगों के लिए, जिनकी बातचीत आज्ञाकारिता में व्यक्त विश्वास से मेल नहीं खाती, जॉन को पता है कि वे खुद को धोखा दे रहे हैं और वे दूसरों को धोखा दे सकते हैं, लेकिन वे भगवान को धोखा नहीं दे रहे हैं। इसलिए जॉन के पास उन लोगों के लिए चेतावनी है जो रक्तहीन धर्म रखते हैं। जो कोई भी कहता है कि मैं उसे जानता हूँ, यह कहना आसान है, यह कहना आसान है, ओह हाँ, मैं भगवान को जानता हूँ, मैं यीशु में विश्वास करता हूँ।

जो कोई कहता है कि मैं उसे जानता हूँ, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं है। परन्तु जो कोई उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है। इसलिए, यह उन लोगों के लिए उनका संदेश है जो आलसी हैं, जो एक बात कहते हैं, परन्तु दूसरे तरीके से जीते हैं।

मैंने कहा कि वे लोग खुद को धोखा दे रहे हैं। जॉन वास्तव में ज़्यादा सीधे हैं। उनका कहना है कि वह व्यक्ति झूठा है।

और अनुवाद है जो कोई भी; यह थोड़ा व्यापक है। ग्रीक वे हैं जो। तो, यह वास्तव में इस व्यक्ति को मानवीकृत करता है और निर्दिष्ट करता है, उस व्यक्ति को व्यक्तिगत बनाता है जिसकी कल्पना की गई है।

तो, यह सिर्फ एक सामान्य चेहराविहीन द्रव्यमान नहीं है, बल्कि जब आप इसे पढ़ते हैं, कम से कम जैसा कि मैंने इसे मूल रूप में पढ़ा, तो मैं सोचता हूँ, क्या यह मैं हूँ, भगवान? वह जो, वह व्यक्ति जो ऐसा करता है। यह संदेश उन लोगों के लिए है जो लापरवाह हैं। जब भगवान की बात आती है, तो कुछ कहना आसान होता है, खासकर इसलिए क्योंकि हम भगवान की छवि में बने हैं।

और जब आप दुनिया भर में यात्रा करेंगे, तो आप पाएंगे कि ईश्वरत्व की एक सामान्य अवधारणा है। और हर भाषा में, जिसे हम अंग्रेजी में भगवान कहते हैं, उसके लिए एक शब्द है। लेकिन उस शब्द का मतलब कई तरह की चीजें हो सकती हैं।

इस्लाम में अल्लाह, ईसाई धर्मग्रंथों में यहोवा, प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा से बहुत अलग है। जहाँ तक प्रत्येक धर्म में अंतिम अधिकार की बात है, तो उनका मतलब एक ही है, लेकिन उनका चरित्र बहुत अलग है, और वे धरती पर एक बहुत अलग संदेश लेकर आए हैं। इसलिए ईश्वर के बारे में ये संदेश अलग-अलग हैं।

विश्वासियों के लिए, शाश्वत परमेश्वर दुष्ट को हरा देता है। और आप उसके और उसके वचन के माध्यम से जीत सकते हैं, और आप जीतते भी हैं। जो लोग आलसी हैं, वे खुद को मूर्ख न बनाएँ।

वे परमेश्वर को मूर्ख नहीं बना रहे हैं। दूसरा, प्रेम। ध्यान दें कि यदि आप परमेश्वर और फिर दिव्यता के लिए अन्य शब्दों को जोड़ते हैं, जैसे कि बेटा, तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर 1 यूहन्ना में अब तक की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है।

यदि आप 1 यूहन्ना पर टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, तो अक्सर सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि लड़ाई चल रही है, कौन क्या कहता है, और सामाजिक सेटिंग। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सामाजिक सेटिंग महत्वहीन है, और मैं इसके बारे में बात करूँगा, लेकिन हम अपना ध्यान परमेश्वर, विशेष रूप से परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र पर केन्द्रित करना चाहते हैं, क्योंकि यूहन्ना इसी बारे में सबसे अधिक बात करता है। और यह परमेश्वर के साथ उस रिश्ते और परमेश्वर के बारे में उन विश्वासों और परमेश्वर के ज्ञान से है जिसके बारे में वह लोगों से बात कर रहा है, और मुझे लगता है कि वह अभी भी हमसे बात करता है।

जहाँ तक क्रिया, मैं प्यार करता हूँ, यह 1 यूहन्ना में 28 बार, 2 में दो बार और 3 में एक बार आता है। और मरने वाले विश्वासियों के लिए यूहन्ना का संदेश है, परमेश्वर के प्रति गहरे प्रेम का संकेत साथी विश्वासियों के लिए प्रेम है, या जिसे वह होई एडोल्फोई, भाइयों के लिए कहते हैं, जिसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं। और ऐसा प्रेम हमें आश्चस्त करता है कि इस दुनिया में मृत्यु से परे हमारे पास अनंत जीवन है। एक ईसाई होने का एक बड़ा आश्वासन वह प्रेम है जो आपके पास अन्य लोगों और विशेष रूप से अन्य विश्वासियों के लिए है।

जॉन कहते हैं, 1 जॉन 3:14, हम जानते हैं कि हम मृत्यु से निकलकर जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं। एक पुराना अंग्रेजी शब्द है, भाइयों, यह यहाँ एक अच्छा अनुवाद है क्योंकि इसमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल हैं। इसलिए यह केवल पुरुषों के लिए क्लब नहीं है; यह पूरी मण्डली के बारे में बात कर रहा है।

जो कोई प्रेम नहीं करता, जॉन आगे कहते हैं, वह मृत्यु में रहता है। हमें मसीह में बने रहना चाहिए। हमें सत्य में बने रहना चाहिए।

हमें प्रेम में बने रहना चाहिए। लेकिन जो लोग विशेष रूप से अन्य विश्वासियों के लिए ऐसा प्रेम नहीं जानते जो खुद से बड़ा हो, खुद के लिए उनके प्रेम से बड़ा हो, जॉन कहते हैं, वे मृत्यु में बने रहते हैं। यही उनका संदेश है जो विश्वासियों को मरते हुए दिखाता है।

अगर आपमें यह प्यार है, तो आप जानते हैं, और सताए गए इलाकों में, यह प्यार आपको बहुत परेशानी में डाल सकता है क्योंकि यह एक ऐसा संबंध है जो आपको उन लोगों से जोड़ता है जो निंदा के अधीन हैं। और, आप जानते हैं, शैतान को विभाजित करना और जीतना पसंद है। और ईसाई अपनी एकजुटता और एक-दूसरे की देखभाल के कारण आंशिक रूप से जीवित रहते हैं।

और यही प्रेम है, जब आप दूसरों की इतनी परवाह करते हैं कि आप उनके लिए अपनी जान जोखिम में डाल देते हैं। पिछली बार जब मैं सूडान में था, तो सुरक्षाकर्मी मुझे गिरफ्तार करने आए थे, और मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। मैं एक सेवा में धर्मोपदेश का नेतृत्व कर रहा था, और चर्च के पादरी ने सुरक्षाकर्मियों से इस तरह बात की कि उन्होंने उन्हें देरी से बुलाया क्योंकि उन्हें पता था कि मेरा विमान जल्द ही रवाना होने वाला है।

और इसलिए, हवाई अड्डे के रास्ते में, मुझे बताया गया कि, आप जानते हैं, पादरी अब सुरक्षा के साथ है, उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया है। और मुझे यह नहीं पता था। लेकिन उसने खुद को गिरफ्तार करवा लिया ताकि मैं और मेरा सहकर्मी हवाई अड्डे तक पहुँच सकें।

और फिर सुरक्षाकर्मियों ने हमें हवाई अड्डे पर गिरफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन वे हमें नहीं ढूँढ़ पाए। और हम विमान में चढ़ गए क्योंकि मुझे लगता है कि भगवान ने सुरक्षाकर्मियों की आँखें अंधी कर दी थीं जो हमारे पासपोर्ट देख रहे थे। लेकिन हम कभी हवाई अड्डे पर नहीं पहुँच पाते अगर पादरी और उस सम्मेलन में मौजूद 120 या उससे ज़्यादा पादरी और पादरी कार्यकर्ताओं के प्रति उनके प्रेम के कारण ऐसा नहीं होता।

वह चाहते थे कि यह जारी रहे। वह नहीं चाहते थे कि दूसरे देश से आए मेहमानों को गिरफ्तार किया जाए। और इसलिए, उन्होंने खुद को ऐसी स्थिति में रखा कि दूसरे लोग आगे बढ़ सकें।

और फिर वह उत्पीड़न शुरू हुआ जो उसे कई महीनों और सालों तक सहना पड़ा। वह प्रेम था। हम मृत्यु से निकलकर जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं।

यहाँ पर आलसियों के लिए एक संदेश है। हम मृत्यु में रहते हैं। हमें अनन्त जीवन का आश्वासन नहीं है।

यदि हमारे साथी विश्वासियों के प्रति हमारा सम्मान गुनगुना है या अनुपस्थित है। और यही आयत यहाँ भी लागू होती है। जो कोई प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में रहता है।

और इसलिए यह बहुत से लोगों के लिए एक जाँच है। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि चर्च जाना एक बहुत अच्छी बात है। लेकिन पिछले कुछ सालों में, मैंने कुछ लोगों को देखा है जो चर्च जाते हैं और यही उनका धर्म है।

और यही उनके धर्म की अभिव्यक्ति है। वे चर्च जाते हैं। वे ऐसा नहीं दिखाते कि उन्हें चर्च में कोई पसंद है।

वे इसलिए जाते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि यह उनका कर्तव्य है। और शायद इससे उन्हें अच्छा महसूस होता है। लेकिन जीवन में उनकी निष्ठा, उनके पैसे की भक्ति, उनकी ऊर्जा की भक्ति, उनके ध्यान की भक्ति, यह किसी भी तरह से देखने योग्य नहीं है।

यह चर्च में किसी और के आध्यात्मिक और शारीरिक कल्याण की ओर निर्देशित नहीं है। उनके सामाजिक संपर्क कहीं और हैं। तो यह उन लोगों के लिए संदेश होगा जो लापरवाह हैं।

जॉन के पत्रों में तीसरा सबसे अधिक बार इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द, जो 1 जॉन में 25 बार आता है, वह है गिनोस्को, जिसका अर्थ है मैं जानता हूँ। और यह अक्सर अधिक अनुभवात्मक संदर्भ में आता है। यहाँ मरने वाले वफादार लोगों के लिए जॉन का संदेश यह है कि हमारे लिए मसीह की मृत्यु उसके अनुयायियों को पिता पर भरोसा करने के लिए तैयार करती है यदि वह हमें अपनी सेवा में अपना जीवन देने के लिए बुलाता है।

मसीह के हमारे प्रति निस्वार्थ प्रेम के कार्य दूसरों के प्रति हमारे निस्वार्थ प्रेम में परिवर्तित हो जाते हैं। और यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:16 में इसे इस प्रकार बताया है। हम प्रेम को इसी से जानते हैं कि उसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया।

और हमें अपने भाइयों के लिए अपनी जान दे देनी चाहिए। अब, मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब यह है कि हमें दूसरे ईसाइयों की खातिर किसी तरह से मरने का रास्ता तलाशना चाहिए। लेकिन यीशु ने क्रूस पर चढ़ने से पहले हर तरह से अपनी जान दे दी।

और वह इसका प्रतीक पैर धोने से करता है। उसने यूहन्ना अध्याय 13 में शिष्यों के पैर धोए। और वह अक्सर इसकी सराहना करता है और वह अन्य लोगों के प्रति देखभाल और प्रेम की अभिव्यक्ति का एक सेवकीय तरीका प्रस्तुत करता है।

और यही बात यूहन्ना उन विश्वासियों से कहता है जो मर रहे हैं। उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी। हमें भी भाइयों के लिए अपनी जान दे देनी चाहिए।

साथ ही, यहाँ उन लोगों के लिए भी संदेश है जो आलसी हैं, क्योंकि कुछ लोग सुनते नहीं हैं। या वे प्रेरितों के पूरे वचन को ग्रहण नहीं करते। वे उस चीज़ का अनुसरण करते हैं जिसे यूहन्ना ने भ्रम की आत्मा कहा है।

एक तरफ सत्य की आत्मा है। दूसरी तरफ असत्य, झूठ, त्रुटि की आत्मा है। और ऐसा तब होता है जब लोग ईश्वर को नहीं जानते।

बाद में यूहन्ना के सुसमाचार में करूँगा ।

उन लोगों के बारे में जो संदेश प्राप्त करते हैं और परमेश्वर के बच्चे बन जाते हैं। यूहन्ना उन लोगों से कहता है जो रक्तहीन धर्म रखते हैं, हम परमेश्वर से हैं। वह अपने बारे में, अन्य प्रेरितों के बारे में, और चर्चों के समुदाय में उन लोगों के बारे में बोल रहा है जिन्हें वह संबोधित करता है जो मसीह को उन शर्तों पर जानते हैं जो यूहन्ना और अन्य प्रेरित सिखाते और प्रचार करते हैं।

हम ईश्वर से हैं। जो ईश्वर को जानता है, वह हमारी बात सुनता है। सुनने की बात है, सुनने का महत्व है।

जो कोई परमेश्वर से नहीं है, वह हमारी बात नहीं सुनता। इससे हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचानते हैं। इसलिए, लापरवाह लोगों के लिए उनका संदेश है कि आप यह सुनिश्चित करें कि आप प्रेरितों के संदेश को सुन रहे हैं।

यदि आप चर्च से जुड़े हैं तो आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप ईश्वर की अपनी अवधारणा और चर्च जीवन की अपनी अवधारणा को अनुकूलित न करें। सुनिश्चित करें कि आप इसे इस तरह से अनुकूलित न करें कि यह उस संदेश से मेल न खाए जो मसीह से प्रेरितों तक पहुँचाया गया था और तब से ईमानदारी से आगे बढ़ाया गया था। प्रारंभिक ईसाई समुदाय में एक और खिलाड़ी जो जॉन और उसके भाई जेम्स के बहुत करीब था, और जेम्स, जो 60 के दशक की

शुरुआत में यरूशलेम में शहीद हो गया था, और पीटर, इन लोगों के समकालीन एक और व्यक्ति, यीशु का एक और सौतेला भाई है जिसका नाम जूड है।

और जब आप यहूदा के पत्रों को पढ़ते हैं, तो आपको पद 3 में याद आता है कि वह ईसाइयों के पास मौजूद सामान्य उद्धार के बारे में बात करता है, वे चीजें जो हम ईसाई होने के नाते मानते हैं, लेकिन वह कहता है, आप जानते हैं, मुझे आपको एक पत्र लिखना है क्योंकि कुछ लोग बिना किसी ध्यान दिए घुस आए हैं, और वे ईश्वरविहीन लोग हैं, और वे हमारे प्रभु यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं, और वे ऐसा जीवन जी रहे हैं जो ईश्वर के ज्ञान के अनुरूप नहीं है। उसका तात्पर्य है कि यह यौन अनैतिकता है। और जब आप यहूदा की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आप देख सकते हैं कि ये लोग त्रुटि की आत्मा से भरे हुए हैं।

जाहिर है, वे यीशु के अनुयायी होने का दावा करते हैं, लेकिन उनके जीवन और उनके विश्वासों से, जब आप जानते हैं कि यीशु में विश्वास से उनका वास्तव में क्या मतलब है, तो वे ईश्वर को नहीं जानते हैं, और वे उस विश्वास को नहीं सुन रहे हैं जो हमेशा के लिए दिया गया था। तो यह उन लोगों के लिए संदेश है जो इस बात से सहमत नहीं हैं। यदि आप पूरे प्रेरितिक वचन को नहीं सुन रहे हैं, और आज दुनिया भर के चर्चों में ऐसा होता है, तो ऐसे बड़े चर्च निकाय हैं जो उन पहलुओं को नकारते हैं जिन पर उनका चर्च पिछले 100 या 200 सालों तक पश्चिम में विश्वास करता रहा है, जहाँ चमत्कार और रक्त प्रायश्चित्त जैसी चीजों और यहाँ तक कि लिंग पहचान जैसी चीजों को भी नकारा जाता है, जिसे ईश्वर ने निर्धारित किया है, पुरुष और महिला, उसने उन्हें बनाया है।

ऐसे चर्च समूह हैं जो लिंग सिद्धांत के क्षेत्र में बहुत, बहुत आगे हैं। और, जाहिर है, गर्भपात एक और मुद्दा है जिसके बारे में मुझे लगता है कि सदियों से ईसाई कहते आए हैं कि यह संगत नहीं है। अजन्मे बच्चों को मारना मसीह का अनुसरण करने के साथ संगत नहीं है।

लेकिन पश्चिम में, हमारे पास ऐसे चर्च हैं जो गर्भपात के बहुत समर्थक हैं, और मुझे लगता है कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण और दुखद गलत भावना है। इसलिए, हमने ईश्वर को देखा है, और हमने प्रेम को देखा है, और हमने ज्ञान को देखा है। ये हमारे तीन प्रमुख शब्द हैं जिनमें जॉन के पत्रों में मरने वाले विश्वासियों के लिए एक संदेश और आलसियों के लिए एक संदेश है।

और अगले व्याख्यान में, हम उन शब्दों की सूची पर नज़र डालना जारी रखेंगे जो जॉन के पत्रों के केंद्र बिंदु को दर्शाते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट यारबोरो और जोहानिन पत्रों पर उनकी शिक्षा है, मसीह में जीवन को संतुलित करना। यह सत्र संख्या 2A है, 1, 2 और 3 जॉन में धर्मशास्त्रीय विषय।